Notification No: 571/2024
Date of Notification: 06/12/2024
Name of Scholar: Balbir Singh
Name of Supervisor: Prof. Indu Virendra
Department: Hindi
Topic: Britain ki Hindi-Punhabi kahaniyon mein Pravasi jeevan ka Tulanatmak Adhyayan (1999 se 2015 Tak ki Kahaniyon ke Sandarbh mein)
Keywords: Pravasi, Nasliya Bhedbhav, Nostalgia, Sanskritik Dwandw, Swarthsiddhi, Arthik unnati, Shoshan.

Finding

प्रवास मानव जीवन का शाश्वत सत्य है। वर्तमान समय में ब्रिटेन जैसे विकसित और बहुसांस्कृतिक देश में प्रवासी भारतीयों की स्थिति और उनके जीवन को इस शोध कार्य में हिंदी और पंजाबी कहानियों के माध्यम से तुलनात्मक रूप में उजागर करने का प्रयत्न किया गया है। प्रवास के बाद प्रवासी व्यक्ति को जो अनुभव प्राप्त होते है और मेजबान देश में वह जिस प्रकार का जीवनयापन करता है तथा जिन जिन समस्याओं से संघर्ष करते हुए अपने अस्तित्व और संस्कृति को बनाए रखने का प्रयत्न करता है। यही संघर्ष और आशा ही ब्रिटेन की हिंदी पंजाबी कहानियों का आधार बिंदु है। प्रवासी साहित्यकारों ने प्रवासी जीवन के अनुभवों को यथार्थ रूप में अपने साहित्य में चित्रित किया है। आरंभिक समय में प्रवासियों को विकसित पूंजीवादी देश और उनकी खुली संस्कृति में स्वयं को ढालना कठिन लगा था। जैसे जैसे समय बदला प्रवासी व्यक्ति ने स्वयं को आर्थिक रूप से सम्पन्न बनाया। उसके बाद वह भी विदेशी भूमि की मुख्य धारा में सम्मिलित होकर अपना प्रतिनिधित्व करने लगा। आरंभ में प्रवासी व्यक्ति को नस्लीय भेदभाव और नॉस्टेलजिया ने घेर रखा था। आज स्थिति में काफी सुधार हुआ है। सांस्कृतिक द्वंद्व से उत्पन्न स्थितियों में भी तालमेल बिठाने का संभव से संभव प्रयास कर रहा है। पीढ़ीगत अंतर में भी कुछ परिवर्तन समय के साथ दिखाई दे रहे है। स्वार्थसिद्धि प्रवासी जीवन का आधार बनकर रह गई है। जिसे हिंदी और पंजाबी के साहित्यकारों ने अपने साहित्य में प्रमुख स्थान दिया है क्योंकि प्रवासी व्यक्ति धन और सुविधासम्पन्न जीवन के लिए विदेश गया है, जिसके लिए वह अधिक से अधिक धन अर्जित करना चाहता है। यह धन की लालसा और स्वार्थपूर्ति मनुष्य के पारिवारिक संबंधों तक पर दिखाई देती है। सफल दाम्पत्य के स्थान पर असफल और तनावपूर्ण दाम्पत्य जीवन देखने को मिलता है। प्रवासियों का उद्देश्य आर्थिक रूप से स्वयं को सशक्त बना विदेशी भूमि पर अपने अधिकारों की रक्षा करना है।